



उत्तर:- हीरा और मोती बिना कोई वचन कहे एक-दूसरे के मन की बात समझ जाते थे। प्रायः वे एक दूसरे से स्नेह की बातें सोचते थे। यद्यपि मनुष्य स्वयं को सब प्राणियों से श्रेष्ठ मानता है किंतु उसमें भी ये शक्ति नहीं होती कि वह दूसरों के मनोभावों को समझ सके।

9.2 उस एक रोटी से उनकी भूख तो क्या शांत होती; पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया।

उत्तर:- हीरा और मोती गया के घर बंधे हुए थे। गया ने उनके साथ अपमान पूर्ण व्यवहार किया था। इसलिए वे क्षुब्ध थे। परन्तु तभी एक नन्हीं लड़की ने आकर उन्हें एक रोटी ला दी। यद्यपि इससे हीरा-मोती की भूख कम नहीं हो सकती थी, तथापि उन्होंने बालिका के प्रेम का अनुभव कर लिया और प्रसन्न हो उठे।

10. गया ने हीरा-मोती को दोनों बार सूखा भूसा खाने के लिए दिया क्योंकि —

क. गया पराये बैलों पर अधिक खर्च नहीं करना चाहता था।

ख. गरीबी के कारण खली आदि खरीदना उसके बस की बात न थी।

ग. वह हीरा-मोती के व्यवहार से बहुत दुखी था।

घ. उसे खली आदि सामग्री की जानकारी नहीं थी।

उत्तर:- ग. वह हीरा-मोती के व्यवहार से बहुत दुखी था।

• रचना-अभिव्यक्ति

11. हीरा और मोती ने शोषण के खिलाफ़ आवाज़ उठाई लेकिन उसके लिए प्रताड़ना भी सही। हीरा-मोती की इस प्रतिक्रिया पर तर्क सहित अपने विचार प्रकट करें।

उत्तर:- हीरा और मोती शोषण के विरुद्ध हैं वे हर शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाते रहे हैं। उन्होंने झूरी के साले गया का विरोध किया तो सूखी रोटियाँ और डंडे खाए फिर काँजीहौस में अन्याय का विरोध किया और बंधन में पड़े। मेरे विचार से उन्होंने शोषण का विरोध करके ठीक किया क्योंकि शोषित होकर जीने का क्या लाभ।

शोषित को भय और यातना के सिवा कुछ प्राप्त नहीं होता।

12. क्या आपको लगता है कि यह कहानी आज़ादी की कहानी की ओर भी संकेत करती है ?

उत्तर:- यह कहानी अप्रत्यक्ष रूप से आज़ादी के आंदोलन से जुड़ी है यह कहानी दो बेलों से सम्बंधित है। दोनों बेल संवेदनशील और क्रांतिकारी भारतीय हैं। दोनों मिलकर आज़ादी पाने के लिए संघर्षरत रहते हैं। ये अपने देश (झूरी के घर) से बहुत प्रेम करते हैं। उन्हें दूसरे देश में (घर में) रहना पसंद नहीं। स्वदेश जाने के लिए वे हर बाधा का डटकर सामना करते हैं। भूखे — प्यासे रहना पड़ता है, कैद में रहना पड़ता है। ये हमारे क्रांतिकारियों की लड़ाई याद दिला देते हैं।

• भाषा-अध्ययन

13. बस इतना ही काफ़ी है।

फिर मैं भी जोर लगाता हूँ।

” ‘ ही ’ , ‘ भी ’ वाक्य में किसी बात पर ज़ोर देने का काम कर रहे हैं। ऐसे शब्दों को निपात कहते हैं। कहानी में पाँच ऐसे वाक्य छाँटिए जिनमें निपात का प्रयोग हुआ हो।

उत्तर:- ‘ ही ’ निपात —

1. एक ही विजय ने उसे संसार की सभ्य जातियों में गण्य बना दिया।
2. अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति था, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करनेवाला मनुष्य वंचित हैं।
3. नाँद में खली-भूसा पड़ जाने के बाद दोनों साथ ही उठते, साथ नाँद में मुँह डालते और साथ ही बैठते थे।
4. एक मुँह हटा लेता, तो दूसरा भी हटा लेता।
5. अभी चार ही ग्रास खाये थे दो आदमी लाठियाँ लिये दौड़ पड़े, और दोनों मित्रों को घेर लिया।

‘ भी ’ निपात —

1. कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर हैं, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ जाता है, किन्तु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना।
2. उसके चहरे पर एक स्थायी विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख-दुःख, हानि-लाभ, किसी भी दशा में बदलते नहीं देखा।
3. चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं फिर भी बदनाम हैं।
4. गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्वपूर्ण थी।
5. झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे। यहाँ मार पड़ी।

14.1 रचना के आधार पर वाक्य के भेद बताइए तथा

उपवाक्य छाँटकर उसके भी भेद लिखिए —

दीवार का गिरना था कि अधमरे से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे।

उत्तर:- मिश्र वाक्य

मुख्य उपवाक्य — अधमरे से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे।

गौण उपवाक्य — दीवार का गिरना था।

14.2 सहसा एक दढियल आदमी, जिसकी आँखे

लाल थी और मुद्रा अत्यन्त कठोर, आया।

उत्तर:- मिश्र वाक्य

मुख्य उपवाक्य — सहसा एक दढियल आदमी आया।

गौण उपवाक्य — जिसकी आँखे लाल थी और मुद्रा अत्यन्त कठोर।

14.3 हीरा ने कहा -गया के घर से नाहक भागे।

उत्तर:- मिश्र वाक्य

मुख्य उपवाक्य — हीरा ने कहा।

गौण उपवाक्य — गया के घर से नाहक भागे।

14.4 मैं बेचूँगा, तो बिकेंगे।

उत्तर:- मिश्र वाक्य

मुख्य उपवाक्य — तो बिकेंगे।

गौण उपवाक्य — मैं बेचूँगा।

14.5 अगर वह मुझे पकड़ता, तो मैं बे-मारे न छोड़ता।

उत्तर:- मिश्र वाक्य

मुख्य उपवाक्य — मैं बे-मारे न छोड़ता।

गौण उपवाक्य — अगर वह मुझे पकड़ता।

15. कहानी में जगह – जगह पर मुहावरों का प्रयोग हुआ है कोई पाँच मुहावरे छाँटिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर:-

मुहावरा	वाक्य-प्रयोग
जी तोड़ काम करना	भारतीय किसान जी तोड़ काम करते हैं।
टाल जाना	सेठजी नौकर को मदद करने का जूठा आश्वासन देते रहें पर जरूरत पड़ने पर टाल गए।
जान से हाथ धोना	युद्ध में हजारों जवान जान से हाथ धो बैठते हैं।
नौ दो ग्यारह होना	पुलिस के आने की भनक लगते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गए।
ईंट का जवाब पत्थर से देना	भारतीय खिलाड़ियों ने प्रतिद्वंद्वी टीम को ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

***** END *****